# मौर्यकालीनएवं गुप्तकालीन जातीय संरचना का अध्ययन

**हुकमचंद चौधरी** (शोधार्थी) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ
**डॉ. मनीष कुमार सिंह** (शोध निर्देशक) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ

.

**जातीय संरचना**

वर्ण तथा जाति को समानार्थी शब्दों के रूप में नहीं कहा जा सकता। भारत में जातियों का विकास वर्णव्यवस्था से सर्वथा स्वतंत्र रूप से हुआ है। इतिहासकार काणे के अनुसार वर्ण की धारणा वंश, संस्कृति, चरित्र एवं व्यवसाय पर मूलतः आधारित है। इसमें व्यक्ति की नैतिक एवं बौद्धिक योग्यता का समावेश होता है और यह स्वाभाविक वर्गों की व्यवस्था का परिचायक है। जाति व्यवस्था जन्म एवं आनुवांशिकता पर बल देती है और बिना कर्तव्यों के आचरणों पर बल दिए केवल विशेषाधिकारों पर हीआधारित है। वर्णों की संख्या चार है पर जातियों की संख्या हजारों मेंहै। अनेक जातियाँ ऐसी है जिन्हें किसी भी वर्ण के अन्तर्गत नहीं रखा जासकता। वर्णों का उदय समाज में पहले हुआ तथा जातियों का अस्तित्वबाद में आया।

बौद्ध एवं जैन साहित्य में जाति–व्यवस्था के लगभग समस्त मूलसूत्रों का विवरण प्राप्त होता है। बौद्ध ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि भारतीयसमाज में जातीय संरचना भली–भाँति प्रतिष्ठित हो चुकी थी। समाज केविभिन्न उद्योग–धन्धों के अनुसरण करने वाले व्यक्ति विभिन्न श्रेणियों मेंसंगठित थे। जातकों में कुम्भकार, कर्मार, सुवर्णकार, रजक, नट, गन्धर्व,चण्डाल, पुक्कस, नेसाद, वेण, रथकार, नापित आदि का विवरण प्राप्त होताहै। विनयपिटक से भी पता चलता है कि चाण्डालों, वेणों, निषादों, रथकारोंने उस समय तक अपनी अलग–अलग जातियाँ विकसित कर ली थी।

मौर्यकाल में भी अनेक व्यवसायों का वर्णन मिलता है। इन्हींव्यवसायों के आधार पर अनेक श्रेणियाँ भी विकसित हो चुकी थीं।अर्थशास्त्र में इस प्रकार की 18 श्रेणियों का उल्लेख प्राप्त होता है।मेगस्थनीज के अनुसार भारतीय लोग सात जातियों में विभक्त थे–दार्शनिक, कृषक, गड़रिया, कारीगर (शिल्पकार), योद्धा (सैनिक), निरीक्षकएवं सभासद। उसके अनुसार भारत के लोग अपनी जाति में ही विवाहकरते थे।

मनुस्मृति में अनेक जातियों की उत्पत्ति अन्तर्जातीय विवाहों के फलस्वरूप बतायी गयी है। इसमें निषाद, सूत, उग्र, अबष्ठ, विदेह, मगध आदि 57 जातियों का उल्लेख हुआ है। महाभारत के अनुसार समाज में अनेक जातियों की उत्पत्ति अनुलोम और प्रतिलोम विवाहों के परिणामस्वरूप हुई है। याज्ञवल्क्य, नारद, विष्णु आदि अन्त्यज, अम्बष्ठ, आयोगव, उग्र, करण, कर्मार, कांस्यकार, गोपाल, चर्मकार, चाण्डाल, चारण, चक्री, तन्तुवाय, तक्षा, ध्वजी, नट, नापित, निषाद आदि का उल्लेख करते हैं–

**अम्बष्ठ**–बौधायन के अनुसार ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री की सन्तान है। अम्बष्ठ सम्भवतः प्रादेशिक नाम का द्योतक है।

**आयोगव**–गौतम तथा कौटिल्य ने इसको शूद्र पुरुष एवं वैश्य स्त्री की सन्तान माना है। याज्ञवल्क्य एवं विष्णु ने भी इसका उल्लेख किया है।

**उग्र**–गौतम ने इसे जाति को वैश्य पुरुष एवं शूद्र स्त्री से उत्पन्न माना है। बौधायन तथा कौटिल्य ने इसको क्षत्रिय–शूद्र की सन्तान माना है। मनु के अनुसार इसका प्रमुख व्यवसाय पशुओं को पकड़ना और मारना था।

**निषाद**–बौधायन इसे ब्राह्मण पुरुष एवं शूद्र स्त्री से उत्पन्न बताया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र एवं मनुस्मृति से भी इसकी पुष्टि होती है।

**मागध**–गौतम, कौटिल्य एवं मनुस्मृति के अनुसार यह वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय स्त्री की सन्तान है। बौधायन के अनुसार यह शूद्र पुरुष एवं क्षत्रिय स्त्री की सन्तान है। इस तरह मागध को प्रतिलोम जाति के रूप में लिया गया।

**रथकार**–बौधायन ने इसे वैश्य पुरुष और शूद्र स्त्री की अनुलोम सन्तान कहा है। इनका व्यवसाय रथ निर्माण था।

 Copyright @ 2024 Author

**वैदेहक**–गौतम के अनुसार इस जाति का उद्भव शूद्र पुरुष एवं क्षत्रिय स्त्री के संयोग से हुआ है। स्मृतियों में इस जाति का जन्म वैश्य पुरुष एवं ब्राह्मण स्त्री से माना गया है।

**सूत**–मनु के अनुसार यह क्षत्रिय पुरुष और ब्राह्मण स्त्री से उत्पन्न हुआ। इसका मुख्य व्यवसाय रथ–चालन था।

**पुक्कस**–बौधायन एवं मनु के अनुसार निषाद पुरुष एवं शूद्र स्त्री की सन्तान है। इसका मुख्य व्यवसाय बिल में रहने वाले जीवों को पकड़ना था।

**पारशव**–ब्राह्मण पिता और शूद्र स्त्री से इसका जन्म हुआ। स्मृतियों में निषाद को ही पारशव कहा गया है तथा पुराणों में भी इसका उल्लेख मिलता है।

**कुक्कुट**–यह जाति शूद्र पुरुष एवं निषाद स्त्री की प्रतिलोम सन्तान थी। कौटिल्य के अनुसार यह उग्र पुरुष और निषाद से उत्पन्न हुई थी।

**आभीर**–मनु ने इस जाति को ब्राह्मण एवं अम्बष्ठ कन्या की सन्तान बताया है। दौलतपुर अभिलेख तथा प्रयाग प्रशस्ति में इसका वर्णन मिलता है। पुराणों में आभीर का उल्लेख है।

**चाण्डाल**–इसकी उत्पत्ति शूद्र पुरुष और ब्राह्मण स्त्री से हुई थी। समाज में चाण्डाल जाति अत्यन्त निम्न मानी जाती थी। चीनी यात्री फाह्यान लिखता है कि जब कभी चाण्डाल बाजार में प्रवेश करता था तब वह लकड़ियाँ बजाता चलता था जिससे आवाज सुनकर लोग हटते चले जायें और उसके स्पर्श से अशुद्ध न हों। वह आगे बताता है कि बहेलिये का एवं मछली पकड़ने का व्यवसाय चाण्डाल अपना सकता था।

**म्लेच्छ**–सूतसंहिता के अनुसार यह ब्राह्मण स्त्री एवं वैश्य पुरुष की सन्तान है। विष्णुपुराण एवं बृहत्संहिता में भी म्लेच्छ का उल्लेख है।

**रजक**–जातकों में रजक शब्द का प्रयोग हुआ है जिससे आधुनिक धोबी एवं रंगरेज दोनों का बोध होता है। स्मृतियों में इसका वर्णन हुआ है।

**व्रात्य**–बौधायन के अनुसार यह वर्णसंकर जाति थी। आपस्तम्ब ने इसको ऐसी जाति कहा है जिसका उपनयन न हुआ हो।

**शौण्डिक**–मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, विष्णु स्मृति के साथ महाभारत में इसका वर्णन हुआ है। मनु ने इस सुरा बेचने वाला कहा है।

**नापित**–वैखानस ने इसे अम्बष्ठ पुरुष एवं क्षत्रिय नारी की सन्तान बताया है। याज्ञवल्क्य एवं पराशर स्मृतियों में भी नापित का उल्लेख प्राप्त होता है।

**धीवर**–यह वैश्य पुरुष एवं क्षत्रिय स्त्री से उत्पन्न प्रतिलोम सन्तान थी। इसका प्रमुख कार्य मछली पकड़ना था।

**तन्तुवाय**–इसे शूद्र कहा गया है। स्मृतियों एवं बृहत्संहिता में इसका वर्णन हुआ है।

**ताम्बूलिक**–कामसूत्र में इसका उल्लेख मिलता है। यह आधुनिक युग का पान का व्यवसाय करने वाला तमोली है।

**सोपाक**–यह चाण्डाल पुरुष तथा पुक्कस नारी की सन्तान है। महाभारत में इसका वर्णन है। इसका मुख्य काम प्राणदण्ड पाये हुए अपराधियों का वध करना था।

 Copyright @ 2024 Author

**सैरिन्ध्र**–यह दस्यु पुरुष एवं आयोगव नारी की सन्तान है। महाभारत के अनुसार केश–सज्जा, लेपन कार्य, माला बनाना आदि इसके प्रमुख कार्य थे।

**तैलिक**–विष्णु धर्मसूत्र में इसका वर्णन है। इससे तेली का बोध होता है। स्कन्दगुप्त के इन्दौर ताम्रपत्र लेख में इसकी चर्चा है।

**डोम**–डोम और चाण्डाल को एक ही श्रेणी में माना जाता है। यह एक अस्पृश्य जाति थी। अलबरूनी के अनुसार ये लोग बाँसुरी बजाते और गाते थे।

**सूचिक या सौचिक**–यह सुई का कार्य करते थे। मनु ने इसे 'तुन्नवाय' भी कहा है। यह वैदेहक पुरुष और क्षत्रिय स्त्री की सन्तान है।

**कुम्भकार**–यह जाति मिट्टी के बर्तन बनाकर अपनी जीविका चलाती थी। उशना के अनुसार यह ब्राह्मण पुरुष एवं वैश्य नारी से उत्पन्न सन्तान है।

**मालाकार**–इसका वर्णन व्यास स्मृति में हुआ है। यह आधुनिक माली जाति का रूप है।

**कारावर**–यह निषाद एवं वैदेही नारी से उत्पन्न जाति है एवं इसका कार्य चर्मकारों का व्यवसाय है।
इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि मौर्यकालीन एवं गुप्तकालीन समाज में अनेक जातियाँ हो गयी थीं, जो पेशे के साथ–साथ आचार–विचार में भी एक दूसरे से अलग थीं। अन्तर्जातीय विवाहोपरान्त उत्पन्न सन्तान के आधार पर, स्थान विशेष के कार्य के आधार पर एवं संस्कार–विहीन होने की स्थिति में अनेक जातियों का विकास हुआ। सभी जातियों की सामाजिक स्थिति एक समान नहीं थी। व्यावसायिक जातियों के अलावा मिश्रित जातियों में कुछ अस्पृश्य समझी जाती थी जिनको सामाजिक अनुक्रम में सबसे निम्नकोटि का समझा जाता था। निश्चय ही भेदभाव एवं उच्च–निम्न की यह भावना समाज में कठोर रूप से व्याप्त थी। जाति–भेद में उदारता का लेशमात्र नहीं था। इन निम्न जातियों को न राजनीति में भाग लेने का अधिकार था, न सामाजिक उत्सवों में। वे न शिक्षा प्राप्त कर सकते थे, न अपना पेशा परिवर्तित कर सकते थे।

**सन्दर्भ ग्रन्थ–**

1. जैन, के0सी0 (1974) प्राचीन भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था एवं धर्म, भोपाल
2. जौहरी, मनोरमा (1982) प्राचीन भारत में वर्णाश्रमएवं जातीय व्यवस्था, वाराणसी
3. दुबे, राजदेव (1988) स्मृतिकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, दिल्ली
4. मिश्रा, ममता (2000) गुप्तयुगीन समाज व्यवस्था, लखनऊ
5. जायसवाल, एस0के0 (2002) प्राचीन भारतीय समाज, लखनऊ
6. आचार्य दीपंकर (2003) कौटिल्य कालीन भारत, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
7. पाठक, विशुद्धानन्द (2004) प्राचीन भारतीय आर्थिक इतिहास, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, लखनऊ
8. उपाध्याय, वासुदेव (2008) प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मन्दिर, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना

 Copyright @ 2024 Author